संत शिरोमणि दादूजी की साधना

डॉ. दयाराम स्वामी
एम.बी.बी.एस. एम.डी. (स्वर्णपदक)
वरिष्ठ मानसिक रोग विशेषज्ञ एवं पूर्व प्रमुख विशेषज्ञ
एस.एम.एस. हॉस्पिटल, जयपुर

वर्तमान परिपेक्ष्य में श्री दादूवाणी का महत्त्व आज का मानव भौतिक उन्नति के शिखर पर पहुँचने को तत्पर है। किन्तु इस भौतिकवाद की चकाचौध में उसने अपनी आत्मिक शांति खो दी है।

यह वर्तमान युग तनाव, अवसाद, घृणा, ऊँचनीच, जातीय भेद, वर्ग भेद, रंग भेद, हिंसा, आतंकवाद इत्यादि बुराईयों से मुक्त नहीं हो रहा है। तथपि आज का मानव नवीन वैज्ञानिक उपलब्धियों के मद में आसुरी में दावनता की ओर बढ़ता जा रहा है। इस समय त्याग, तपस्या नैतिकता, सहिष्णुता, निर-अभिमानता तथा ईश्वरीय शक्ति की सत्ता व उत्कृष्टता आदि दैवी सम्पत्ति की शिक्षा देने वाले सन्तों के उपदेशों की कितनी आवश्यकता है, यह किसी से छिपा हुआ नहीं है। इसलिए आज के स्वार्थी व पथभ्रष्ट मानव समाज को सन्मार्ग पर लाने हेतु संतों के अनुभूतिमय उपदेशों की महती आवश्यकता है।

दादूजी का मध्यमार्ग - संत दादू जी उपासना के क्षेत्र में निष्पक्ष मध्यमार्ग को मानते हैं। वे किसी प्रकार के राग द्वेष व पक्षपात में पड़ना नहीं चाहते हैं, क्योंकि उनका आराध्य निरंजन, निराकार परब्रह्म सब प्रकार के पक्षों, सम्प्रदायों व धर्मों से परे है। उसकी आराधना का सच्चा स्वरूप या प्रकार यही हो सकता है, कि आराध्य के अनुसार ही निष्पक्ष व मध्यम मार्ग का अनुसरण किया जाये। इसीलिये दादूजी कहते हैं:-

दादू ऽल्लह राम का द्वै पख तें न्यारा।
रहितागुण आकार का सो गुरु हमारा।।
ना हम छाड़ैं ना गहैं ऐसा ज्ञान विचार।
मध्य भाइ सेवें सदा दादू मुक्ति द्वार।।

दादूजी का यह मार्ग निराधार व सब प्रकार के द्वैतात्मक द्वन्द्वों से रहित है, क्योंकि परब्रह्म स्वयं निराधार व निर्द्वन्द्व है इसीलिये दादूजी ने कहा है:-

निराधार घर कीजिये जहँ नहिं धरणि प्रकास।
दादू निहचल मन रहे निर्गुण के बे बास।।

धन दादू तहँ जाइये जहँ चन्द सूर नहीं जाइ।
इति दिवस की गति नहीं सब में रह्मा समाइ।।

चल दादू तहँ जाइये माया मोह तें दूर।
सुख दुख को व्यापै नहीं आदिवासी घर पूरि।।

दादू की साधना – यही दादू का सहज मार्ग है। दादू सहज ब्रह्म की प्राप्ति के लिए अन्य साधनों का सहारा न लेकर केवल मनोवृत्ति रूप सुरति को अन्तर्मुखकरके सहज ब्रह्म में लगाने का ही उपदेश करते हैं। इसीसे पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ, पंच प्राण अन्तर्मुख हो जाते हैं व विषयों से निवृत्त हो जाते हैं, अत: यही वास्तविक अनुभूति, यही सच्चा उपदेश, यही उत्कृष्ट योग व परम वैराग्य है। यही दादू की सहज समाधि है, जिसमें वे निरन्तर लीन रहना चाहते हैं और जिसमें मन पहुँच कर ब्रह्मानन्द का आस्वादन करता है। किन्तु यही वृत्ति तब तक अन्तर्मुख होकर सहज ब्रह्म में नहीं लग सकती जब तक कि सहज के प्रति उत्कृष्ट प्रेम जागृत न हो और सहज के प्रति उत्कृष्ट प्रेम तब तक जागृत नहीं हो सकता जब तक कि तीव्र विरह भावना का उदय न हो। अत: दादू जी की साधना में उत्कृष्ट प्रीति व तीव्र विरह का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है इसलिये वे कहते हैं:–

प्रीति न उपजै विरह बिन प्रेम भगति क्यों होई।
सब झूठे दादूभाव बिन कोटि करै जे कोइ।।

संतों का उपदेश आज भी इतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना उन्होंने अपने काल व देश की परिस्थितियों के अनुरूप दिया था। संत हमारी धरती के श्रृंगार है। वे धर्म नहीं, धार्मिकता सिखाते हैं। अधम को अध्यात्म के मार्ग पर से जाते हैं। धर्म का धंधा करने वाले नकली, ढोंगी बढ़ते जा रहे हैं। ऐसे में पुन: एक बड़ा भरोसा, उपाय और उपचार है हमारे संतों की वाणी। सहज, सरल, संवेदनमय वैदिककाल की चेतना को संतों की वाणी ने पुन: उपलब्ध कर मानवजाति को स्फूर्त्त करने का महत प्रयास किया है, जिससे प्रकृति, परिवेश, पर्यावरण और मानवता सही मार्ग पर प्रशस्त हो सके। कबीर, रैदास, दादू नानक, मलूकदास, रज्जब, सुन्दरदास आदि संतों की पूरी श्रृंखला इसी चिंता में व्याकुल दिखती है। अपनी वाणी द्वारा संतों ने गिरते हुए मनष्य को पहले मनुष्यता, साधुता और इसके पश्चात् देवत्व तक चढ़ने की उन्नत सीढ़ियों को सहज गम्य बनाया है।

दूसरी ओर व्यावहारिक जीवन में हम देखते हैं, अमानवीयता, निदर्यता, पाशविकता, हिंसा, हत्या के उत्तरोतर घातक अस्त्र-शस्त्र के आविष्कारों से मनुष्य इस धरती को उजाड़ने, ध्वस्त और विनष्ट करने की दिशाओं में निर्द्वन्द्व हो बढ़ता जा रहा है। यह बौद्धिक, स्वार्थी पशुतुल्य सोच के भौतिक दिशांतर हैं, जो पाश्चात्य सभ्यता ने गृहीत किए हैं। जहाँ मनुष्य, प्रकृति और परिवेश निपट भौतिक प्रसार है। वस्तुमात्र है। इस विचार ने वस्तु और वस्तु से जुड़ी आंधी की तरह और जंगल की आग की तरह फैला दिया है। इस सोच द्वारा उड़ी धूल और लपटों ने हमारे भावनाप्रधान, भावों की सम्पन्नता अर्जित करने को प्रश्रय देने वाले देश और समाज को अंधा करना और जलाना आरम्भ कर दिया है। भयानक अग्नि की एक नहीं चारों ओर से नदियां अपने वेग से बहने का मार्ग ढूंढती आगे बढ़ रही है। ऐसे में भारत को ही नहीं समूचे विश्व को संतों का और संतों की वाणी का ही भरोसा है। भारतीय संतों की वाणी को जितनी जल्दी हो, जितने तीव्र वेग से फैला सकें, फैलाएं।

सरवर भरिया दह दिसा, पंखी प्यासा जाइ।
दादू गुर परसाद बिन, क्यूँ जल पीवै आइ।।

आपा मैटे हरि भजै, तन मन तजै विकार।
निर्वैरी सब जीव सूँ, दादू यहु मत सार।।

सत्यराम।।